

ॐ सत्

बिना नयन पावे नहीं, बिना नयनकी बात;
सेवे सद्गुरुके यरन, सो पावे साक्षात्. १
भूमी खलत जो प्यासको, है भूजनकी रीत;
पावे नहि गुरुगम बिना, ऐसी अनादि स्थित. २

ऐसी नहि है कल्पना, ऐसी नहीं विभंग;
कई नर पंचमकाजमें, देभी वस्तु अलग. ३
नहि दे तुं उपदेशकुं, प्रथम लेखि उपदेश;
सबसे न्यारा अगम है, वो ज्ञानीका देश. ४
जप, तप और व्रतादि सब, तहां लगी भ्रमरूप;
जहां लगी नहि संतकी, पाई कृपा अनूप. ५
पायाकी ऐ बात है, निज छंदनको छोड;
पिछे लाग सन्पुरुषके, तो सब बंधन तोड. ६

व. प. २५८ मुं. अ. १८४७

—•—